

**International Journal of Innovative Research in Science,
Engineering and Technology**

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 4, Issue 1, January 2015

भारतीय दार्शनिक परंपरा: अद्वैतवाद के संदर्भ में

डॉ. चन्द्र प्रकाश जोशी

व्याख्याता, राजकीय आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, अजमेर

सार

अध्यात्म का मूलधार दर्शन है। भारत में धर्म और दर्शन परस्पर ऐसे रचे-बसे हैं कि उन्हें अलग नहीं किया जा सकता। दोनों की परंपरा समान गति से निरंतर प्रवाहमान द्रष्टव्य है। भारत चिरकाल से एक दर्शन प्रधान देश रहा है। भौतिक जगत का मिथ्यात्व तथा निराकार ब्रह्म का सत्य एवं सर्वव्यापकता यहाँ सदैव विचार का विषय बने रहे हैं। भारतीय दार्शनिक विचारधारा को समय की दृष्टि से चार कालों में विभाजित कर सकते हैं:

1. वैदिक काल में वेद से उपनिषद तक रचा साहित्य समाहित है।
2. महाभारत काल- चार्वाक और गीता का युग।
3. बौद्ध काल- जैन तथा बौद्ध धर्म का युग।
4. उत्तर बौद्ध काल- न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्व तथा उत्तर मीमांसा का युग।

वैदिक काल में आर्यों की चिंताधारा उल्लास तथा ऐश्वर्य भोगने की कामना से युक्त थी। ब्राह्मण ग्रंथों में वैदिक ऋचाओं और मन्त्रों के अर्थ के साथ-साथ तत्कालीन पुराण और इतिहास के संदर्भ भी मिलते हैं। उनके माध्यम से कर्म की महत्ता बढ़ने लगी। उनकी सबसे बड़ी विशेषता वेद और वेदोत्तर साहित्य की मध्यवर्ती कड़ी होने में है। धीरे-धीरे आर्यों की विचारधारा अंतर्मुखी होने लगी। अतः उपनिषदों की रचना हुई। औपनिषदिक साहित्य में अनेक कथाएं दार्शनिक तथ्यांकन करती है।

- पिप्पलाद की कथा ब्रह्म जीव, जगत पर प्रकाश डालती है।
- नचिकेता भौतिक सुखों की निःसारता पर।
- सुकेशा के माध्यम से सोलह कलाओं से युक्त पुरुष का अंकन है तो
- वरुण और भृगु का वार्तालाप ब्रह्म के स्वरूप को स्पष्ट करता है।
- छांदोग्योपनिषद में अंकित बृहस्पति की कथा इन्द्रियों की नश्वरता को उजागर करती है। ऐसी अनेक कथाएं उपलब्ध हैं।

भारत में पहली शताब्दी से पूर्व ही 6 आस्तिक व 3 नास्तिक दार्शनिक मतों का प्रतिपादन हो चुका था।

प्राचीन भौतिक दर्शन	प्रणेता
उच्छेदवाद	अजित केश कम्बलिन
अक्रियावादी	पूरण कश्यप
नित्यवादी	पकुद कच्चायन
नियतिवादी	मक्खलि गोशाल
अनिश्चयवादी	संजय वेलट्पुत्त

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 4, Issue 1, January 2015

आस्तिक मत को षडंग दर्शन सिद्धांत कहते हैं जिसमें सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत शामिल हैं। नास्तिक मत में बौद्ध, जैन तथा चार्वाक प्रमुख हैं, इसे भौतिकतावादी दर्शन भी कहते हैं। कपिल मुनि द्वारा प्रवर्तित इस दर्शन को भारत का प्राचीनतम दर्शन माना जाता है। इनकी रचना है- तत्त्व समासा। बाद के आचार्यों में ईश्वरकृष्ण प्रमुख हैं और उनका ग्रंथ 'सांख्यकारिका' प्रसिद्ध है। इसमें सत्कार्यवाद, विकासवाद तथा भौतिकता के साथ-साथ संख्या आधारित आध्यात्मिकता और वैज्ञानिकता प्रसिद्ध है। इसके प्रणेता पतंजलि हैं जिन्होंने 'योगसूत्र' नामक ग्रंथ की रचना की। ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों का निग्रह, योगमार्ग का मूलाधार है। भारत के इस दर्शन की महत्ता ऐसी रही कि वर्तमान दौर में यू.एन.ओ. द्वारा 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया गया है। न्याय-दर्शन के प्रवर्तक महर्षि गौतम माने जाते हैं, जिनका ग्रंथ 'न्यायसूत्र' इस दार्शनिक प्रवृत्ति का पहला ग्रंथ माना जाता है।

12वीं सदी में न्याय दर्शन को नया रूप गंगेश उपाध्याय ने अपने ग्रंथ 'तत्त्व चिंतामणि' में दिया। इस दर्शन में तर्क और प्रमाण के प्रयोग का महत्त्व प्रतिपादित हुआ है। इस दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कणाद हैं जिन्होंने 'कणाद-सूत्र' रचा। उन्होंने द्रव्य अर्थात् भौतिक तत्त्वों का विवेचन करते हुए परमाणुवाद की स्थापना की। कर्मकांड, यज्ञ आधारित इस दर्शन के प्रतिपादन में आचार्य जैमिनी का नाम अग्रगण्य है। मीमांसा के अनुसार वेदों में कही गई बातें सदा सत्य हैं। यह पुरोहितवाद, बाह्य आडंबर को बढ़ावा देने वाला दर्शन है।

ईसा-पूर्व दूसरी सदी में संकलित बादरायण का ब्रह्मसूत्र इस दर्शन का मूल ग्रंथ है। इसे उत्तर मीमांसा भी कहते हैं। बाद में इस पर दो प्रख्यात भाष्य शंकराचार्य (9वीं सदी) और रामानुज (12वीं सदी) द्वारा लिखे गए।

वेदांत आधारित अन्य दार्शनिक मत

भाष्यकार	वाद	भाष्य
शंकराचार्य (8-9वीं सदी)	अद्वैतवाद	शंकरभाष्य
रामानुजाचार्य (11-12वीं सदी)	विशिष्टाद्वैतवाद	श्रीभाष्य
मध्वाचार्य (13-14वीं सदी)	द्वैतवाद	पूर्णप्रज्ञभाष्य
वल्लभाचार्य (15-16वीं सदी)	शुद्धाद्वैतवाद	अणुभाष्य
निम्बार्काचार्य (13वीं सदी)	भेदाभेदवाद	वेदांत परिजात सौरभ

ज्ञान आधारित इस दर्शन की पृष्ठभूमि में उपनिषद् था और ब्राह्मण-हिन्दू धर्म का अधिकांश दार्शनिक मतवाद इसी वेदांत दर्शन से प्रभावित-प्रेरित रहा है।

परिचय

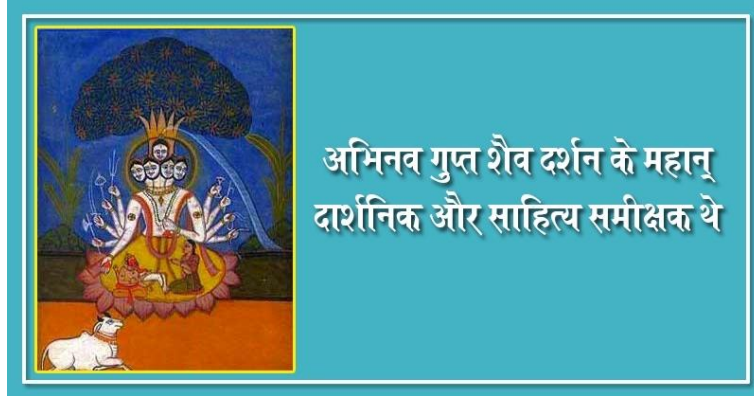
वैदिक ऋषियों ने एकांत अरण्यों (वनों) में रहकर जिन ग्रंथों की रचना की, वे आरण्यक कहलाये। इन ग्रंथों में तप को ज्ञान मार्ग का आधार मानकर तप पर ही बल दिया गया था। सूत्र ग्रंथों की रचना के साथ कर्मकांड की महत्ता बढ़ने लगी। भारतीय यज्ञ पद्धति का सम्यक विवेचन श्रौत सूत्रों में मिलता है, मानव जीवन के सोलह संस्कारों का विवेचन स्मृति सूत्रों में उपलब्ध है। स्मृतियों का परिगणन भी वैदिक साहित्य में ही होता है। इन ग्रंथों में वैदिक संस्कृति का स्वरूप अंकित किया गया है। यद्यपि मनुस्मृति तथा याज्ञवल्क्य स्मृति ही सर्वाधिक चर्चा का विषय बनीं किंतु स्मृतियों की संख्या पुराणों की भांति बहुत अधिक है। स्मृति ग्रंथ लोक जीवन के आचार-विचार, धर्मशास्त्र, आश्रम, वर्ण, राज्य और समाज आदि परक अनुशासन का अंकन प्रस्तुत करते हैं। कुल मिलाकर इस समस्त वैदिक साहित्य में निर्गुण परम सत्ता की विद्यमानता मान्य थी। उसी परम सत्ता की दैवीय शक्ति प्रकृति के विभिन्न तत्त्वों में समाहित मानी जाती थी। वरुण, सूर्य, अग्नि भौतिक तत्त्व प्रदान करने वाले देवताओं के रूप में पूज्य थे। इन्द्र उन

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 4, Issue 1, January 2015

देवताओं के नियंता थे। तब लोग मंदिरों की स्थापना नहीं करते थे क्योंकि प्रकृति के अंश-अंश में उसकी अभिव्यक्ति का अनुभव करते थे। उनके आचार-विचार में कर्म, ज्ञान, उपासना की स्वीकृति थी। तत्कालीन संस्कृति में यज्ञ की प्रधानता थी।[1,2]



अध्यात्म में, अद्वैतवाद, जिसे अद्वैत भी कहा जाता है, का अर्थ है "दो नहीं" या "एक बिना एक दूसरे के अविभाजित"। अद्वैतवाद मुख्य रूप से चेतना की एक परिपक्व अवस्था को संदर्भित करता है, जिसमें I-other का द्वंद्व "पार हो गया" है, और जागरूकता को "केंद्रहीन" और "बिना द्विभाजन" के रूप में वर्णित किया गया है। यद्यपि चेतना की यह अवस्था स्वतःस्फूर्त प्रतीत हो सकती है, सरण करती है, जिसमें नैतिक आदेश शामिल हो सकते हैं। अद्वैतवाद के भारतीय विचार वैदिक और उत्तर-वैदिक उपनिषद दर्शन के साथ-साथ बौद्ध परंपराओं में विकसित हुए। भारतीय सोच में nondualism का सबसे पुराना निशान बुद्ध पूर्व में पाए जाते हैं उपनिषदों जैसे बृहदारण्यक उपनिषद और चंडोग्य उपनिषद है, जो व्यक्ति की आत्मा की एकता पर जोर देती है आत्मा परम ब्रह्म के साथ ब्रह्म। हिंदू धर्म में, अद्वैतवाद आमतौर पर आदि शंकराचार्य की अद्वैत वेदांत परंपरा से जुड़ा हुआ है। में बौद्ध परंपरा गैर द्वंद्व (advaya) खालीपन की शिक्षाओं (साथ जुड़ा हुआ है शून्यता) और दो सत्य सिद्धांत, विशेष रूप से मध्यमक निरपेक्ष और सापेक्ष सत्य की गैर द्वंद्व के शिक्षण, और योगाचार "केवल मन / विचार" (चित्त-मात्रा) या "प्रतिनिधित्व-केवल" (विज्ञप्तिमात्रा) की धारणा। इन शिक्षाओं, के सिद्धांत के साथ मिलकर बुद्ध की प्रकृति के बाद के विकास में प्रभावशाली अवधारणाओं रहे हैं महायान बौद्ध धर्म, न केवल भारत में, लेकिन यह भी में पूर्व एशियाई और तिब्बती बौद्ध धर्म में, सबसे विशेष रूप चान (ज़ेन) और वज्रयान। पश्चिमी नव-प्लेटोनवाद ईसाई चिंतन और रहस्यवाद, और पश्चिमी गूढ़तावाद और आधुनिक आध्यात्मिकता, विशेष रूप से एकतावाद, अनुवांशिकता, सार्वभौमिकता और बारहमासीवाद दोनों का एक अनिवार्य तत्व है।[3,4]

जब nondualism की चर्चा करते हुए, हिंदू धर्म आम तौर पर संस्कृत शब्द का उपयोग करता है अद्वैत, जबकि बौद्ध धर्म का उपयोग करता Advaya (तिब्बती: GNIS-मेड, चीनी: पु-erh, जापानी: फू-नी)। "अद्वैत" (अद्वैत) संस्कृत मूल से है a, नहीं; द्वैत, द्वैत, और आमतौर पर "अद्वैतवाद", "अद्वैत" और "अद्वैत" के रूप में अनुवादित किया जाता है। शब्द "अद्वैतवाद" और शब्द "अद्वैत" जिससे यह उत्पन्न हुआ है, बहुसंयोजक शब्द हैं। अंग्रेजी शब्द की उत्पत्ति लैटिन जोड़ी है जिसका अर्थ है "दो" "गैर-" अर्थ "नहीं" के साथ उपसर्ग।

"अद्वय" (अद्वय) भी एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है "पहचान, अद्वितीय, दो नहीं, एक सेकंड के बिना," और आम तौर पर महायान बौद्ध धर्म, विशेष रूप से मध्यमा के दो सत्य सिद्धांत को संदर्भित करता है। शब्द अद्वैत का जल्द से जल्द उपयोगों में से एक की 4.3.32 कविता में पाया जाता है बृहदारण्यक उपनिषद (~ 800 ईसा पूर्व), और छंद 7 और 12 में Mandukya उपनिषद (विभिन्न 500 बी सी ई 200 ईसा पूर्व के बीच बना दिया है करने के लिए दिनांकित)। यह शब्द बृहदारण्यक उपनिषद के खंड में आत्मा (व्यक्तिगत आत्मा) और ब्रह्म (सार्वभौमिक चेतना) की एकता के एक प्रवचन के साथ प्रकट होता है:

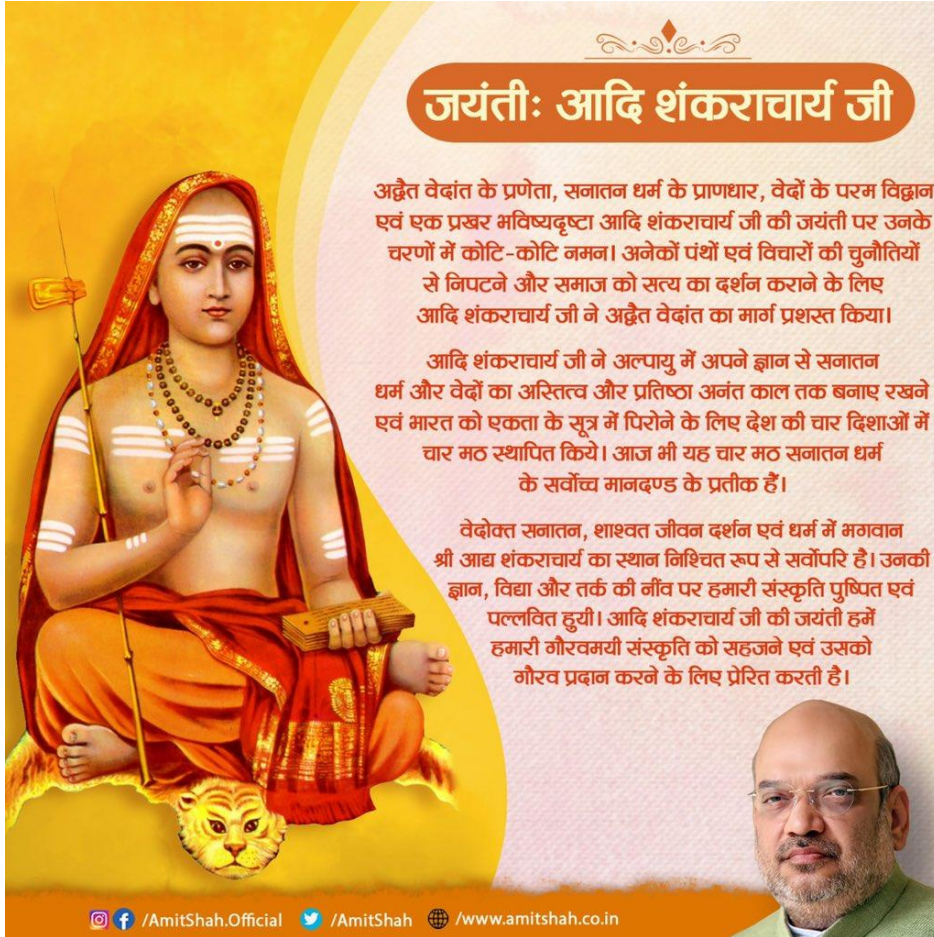
एक सागर है वह एक द्रष्टा, बिना किसी द्वैत के [अद्वैत]; यह ब्रह्म-संसार है, हे राजा। इस प्रकार याज्ञवल्क्य ने उन्हें शिक्षा दी। यही उसका सर्वोच्च लक्ष्य है, यही उसकी सर्वोच्च सफलता है, यही उसका सर्वोच्च संसार है, यही उसका सर्वोच्च आनंद है। अन्य सभी प्राणी उस आनंद के एक छोटे से हिस्से पर रहते हैं।

— बृहदारण्यक उपनिषद ४.३.३२.[5,6]

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 4, Issue 1, January 2015



जयंती: आदि शंकराचार्य जी

अद्वैत वेदांत के प्रणेता, सनातन धर्म के प्राणधार, वेदों के परम विद्वान एवं एक प्रखर भविष्यदृष्टा आदि शंकराचार्य जी की जयंती पर उनके चरणों में कोटि-कोटि नमन। अनेकों पंथों एवं विचारों की चुनौतियों से निपटने और समाज को सत्य का दर्शन कराने के लिए आदि शंकराचार्य जी ने अद्वैत वेदांत का मार्ग प्रशस्त किया।

आदि शंकराचार्य जी ने अल्पायु में अपने ज्ञान से सनातन धर्म और वेदों का अस्तित्व और प्रतिष्ठा अनंत काल तक बनाए रखने एवं भारत को एकता के सूत्र में पिरोने के लिए देश की चार दिशाओं में चार मठ स्थापित किये। आज भी यह चार मठ सनातन धर्म के सर्वोच्च मानदण्ड के प्रतीक हैं।

वेदोक्त सनातन, शाश्वत जीवन दर्शन एवं धर्म में भगवान श्री आद्य शंकराचार्य का स्थान निश्चित रूप से सर्वोपरि है। उनकी ज्ञान, विद्या और तर्क की नींव पर हमारी संस्कृति पुष्पित एवं पल्लवित हुई। आदि शंकराचार्य जी की जयंती हमें हमारी गौरवमयी संस्कृति को सहजने एवं उसको गौरव प्रदान करने के लिए प्रेरित करती है।

[/AmitShah.Official](#) [/AmitShah](#) [/www.amitshah.co.in](#)

1775 से अंग्रेजी के अलावा पश्चिमी भाषाओं में उपनिषदों के शुरुआती अनुवादों द्वारा अंग्रेजी शब्द "नौडुअल" को भी सूचित किया गया था। ये शब्द उपनिषदों के अंग्रेजी अनुवादों की पहली लहर के बाद "अद्वैत" के शाब्दिक अंग्रेजी प्रतिपादन से अंग्रेजी भाषा में प्रवेश कर चुके हैं। ये अनुवाद पूर्व की स्मारकीय पवित्र पुस्तकें (1879) में मुलर (1823-1900) के काम से शुरू हुए। मैक्स मूलर ने "अद्वैत" को "अद्वैतवाद" के रूप में प्रस्तुत किया, जैसा कि हाल के कई विद्वानों ने किया है। हालांकि, कुछ विद्वानों का कहना है कि "अद्वैत" वास्तव में अद्वैतवाद नहीं है। अद्वैतवाद एक अस्पष्ट अवधारणा है, जिसके लिए कई परिभाषाएँ पाई जा सकती हैं। एस्पिन और निकोलॉफ के अनुसार, कुछ हिंदू, बौद्ध और ताओवादी स्कूलों में "अद्वैतवाद" विचार है, जो आम तौर पर बोल रहा है:

... सिखाता है कि ब्रह्मांड की बहुलता एक आवश्यक वास्तविकता के लिए कम करने योग्य है।" हालांकि, चूंकि विभिन्न प्रकार की आध्यात्मिकता और धर्मों में समान विचार और शब्द हैं, प्राचीन और आधुनिक, अंग्रेजी शब्द "नॉनडुअलिटी" के लिए कोई एक परिभाषा पर्याप्त नहीं हो सकती है, और शायद विभिन्न "नॉनडुअलिटीज" या सिद्धांतों के बारे में बात करना सबसे अच्छा है। अद्वैत। डेविड लॉय, जो ताओवाद, महायान बौद्ध धर्म, और अद्वैत वेदांत में विषय और वस्तु के बीच गैर-द्वैत को एक सामान्य सूत्र के रूप में देखते हैं, "पांच स्वादों के अद्वैत" को अलग करता है:

विरोधों के जोड़े में द्वैतवादी सोच का निषेध। ताओवाद का यिन-यांग प्रतीक इस द्वैतवादी सोच के उत्थान का प्रतीक है। अद्वैतवाद, दुनिया की गैर-बहुलता। यद्यपि अभूतपूर्व दुनिया "चीजों" की बहुलता के रूप में प्रकट होती है, वास्तव में वे "एक ही कपड़े की" होती हैं। अद्वैत, विषय और वस्तु का अभेद, या विषय और वस्तु के बीच अद्वैत। Advaya, घटना की पहचान और निरपेक्ष, "द्वंद्व और nonduality की nonduality", सीक्यू के रूप में पाया रिश्तेदार और परम सत्य का nonduality मध्यमक बौद्ध धर्म और दो सत्य सिद्धांत। रहस्यवाद, ईश्वर और मनुष्य के बीच एक रहस्यमय एकता। अद्वैतवाद का विचार आम तौर पर द्वैतवाद के विपरीत है, जिसमें

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 4, Issue 1, January 2015

द्वैतवाद को इस दृष्टिकोण के रूप में परिभाषित किया गया है कि ब्रह्मांड और अस्तित्व की प्रकृति में दो वास्तविकताएं हैं, जैसे कि ईश्वर और दुनिया, या ईश्वर और शैतान, या मन और पदार्थ के रूप में, और जल्द ही। [7,8]



कुछ पश्चिमी धर्मों और दर्शनों में अद्वैत के विचार भी सिखाए जाते हैं, और इसने आधुनिक पश्चिमी आध्यात्मिकता और नए युग की सोच में आकर्षण और लोकप्रियता हासिल की है।

अवलोकन

महाभारत युग तक वैचारिक विरोध बढ़ चुका था। उस संघर्षमय समाज में एक ओर ज्ञान पर बल दिया जा रहा था दूसरी ओर कर्म पर। ऐसी विषम कड़ियों में एक ओर चार्वाक ने ज्ञान और कर्म की निरर्थकता पर प्रकाश डालकर जीवन के भौतिक सुख को उजागर करने का कार्य किया, तो दूसरी ओर सांख्य दर्शन के अंकुर भी तत्कालीन संस्कृति में उभरते दिखलायी पड़े। भगवद्गीता ने सामाजिक विषमताओं को दूर कर समानता लाने का कार्य किया। गीता ने नैतिक दृष्टिकोण को सर्वसुलभ बनाया। इसके माध्यम से प्रबुद्ध मानव समाज से इतर जनसाधारण में चार्वाकजन्म प्रवृत्ति तथा उपनिषदजन्म निवृत्ति तथा उपनिषदजन्म निवृत्ति का समन्वित रूप अंकित हुआ। गीता के उपदेश ने फलाकांक्षाविहीन कर्म में लगे रहने की ओर प्रवृत्त किया। इसके अनुसार समस्त कर्म ईश्वर के प्रति अर्पित होने चाहिए। अतः उत्तर वैदिक काल में सर्वेश्वरवाद का प्रचार हुआ, आत्मा-परमात्मा के अंश-अंशी संबंध का विवेचन हुआ। यज्ञों की अनेक रूपता का प्रसार हुआ। गृह यज्ञ, पंचमहायज्ञ, सोलह संस्कार संबंधी यज्ञों की संपन्नता भिन्न-भिन्न मन्त्रों से होती थी; अतः यज्ञ विषयक ज्ञान पुरोहितों तक सीमित होता गया। उत्तरोत्तर कर्मवाद की महत्त्व बढ़ती गयी। ज्ञान तथा उपासना की अपेक्षा कर्मकांड अधिक महत्त्वपूर्ण हो गया। यज्ञों में अनेक प्रकार के जीवों की आहुतियां दी जाने लगीं। [9,10]

इस प्रकार का रक्तपात जनसाधारण की उत्पीड़ा का कारण बन बैठा। उन विषय घड़ियों में नास्तिक दर्शनों ने जन्म लिया। नास्तिक का अभिप्राय वेदों में विश्वास न होने से था। चार्वाक, जैन तथा बौद्ध दर्शनवादी कर्मकांड की अतिशयता को वैदिक परंपरा मानकर उससे दूर हट रहे थे। उन्होंने मानव-समाज को लेकर जीवन की व्यावहारिक पक्ष की ओर ले जाने का प्रयास किया। चार्वाक दर्शन में सुखपूर्वक जीवनयापन करने पर बल दिया गया था।

यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतपिवेत्।
भस्मी भूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः॥

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 4, Issue 1, January 2015

वेदों का मर्म है वेदांत वेदांत का मर्म है अद्वैत वेदांत

धीरो लोकविपर्यस्त वर्तमानोऽपि लोकसत्। न समाधि न विक्षेपं न लेपं स्वस्य पश्यति॥ भावाभावविहीनो यस्तुप्तो निर्वासनो बुधः। नैव किञ्चित् कृतं तेन लोकदृष्ट्या विकुर्वता॥ प्रवृत्तौ वा निवृत्तौ वा नैव धीरस्य दुर्ग्रहः। यदा यत्कर्तुमायाति तत्कृत्वा तिष्ठतः सुखम्॥ अप्रयत्नात्प्रयत्नाद्वा मूढो नाप्नोति निर्वृतिम्। तत्त्वनिश्चयमात्रेण प्राज्ञो भवति निर्वृतः॥	ज्ञानी तो संसारियों से उल्टा ही होता है। सामान्य व्यवहार करता हुआ न ध्यान का प्रयास करता है, न व्याकुल होता है न मोहित। ज्ञानी तृप्त एवं वासनारहित होता है। बहुत कुछ करते रहने पर भी वस्तुतः वह कुछ नहीं करता। ज्ञानी का पसंद-नपसंद को लेकर हठ नहीं होता। बाहर स्थितियाँ खराब होने पर भी भीतर आनंद में रहता है। मूढ़ पुरुष न प्रयत्न से, न ही अप्रयत्न से शान्ति प्राप्त कर पाता है। ज्ञानी सहज ही ज्ञान से शान्ति प्राप्त कर लेता है।
--	--

अद्वैत वेदांत की शांति और आनंद वाली सीख!

अष्टावक्र गीता

एक अनूठे युवा ऋषि का एक राजा को शुद्धतम उपदेश

इस अद्भुत ग्रंथ के अठारहवें अध्याय पर आचार्य प्रशांत के साथ सरल कोर्स
(अधिक जानकारी के लिए पोस्ट का विवरण देखें)

जनता जनार्दन के लिए इस प्रकार के कथन इतने सुंदर थे कि यह दर्शन चार्वाक (चारु+वाक् = चार्वाक) कहलाया। यह भौतिकवादी, प्रत्यक्षवादी, निरीश्वरवादी, यदृच्छावादी, स्वभाववादी तथा सुखवादी दर्शन है। यह पांच तत्त्वों में से आकाश को स्वीकार नहीं करता, केवल प्रत्यक्ष पर विश्वास करता है। जीवन का लक्ष्य अधिकाधिक भौतिक सुख प्राप्त करना है। विभिन्न सिद्धांत और अवधारणाएं जिन्हें अद्वैत से जोड़ा जा सकता है, उन्हें विभिन्न प्रकार की धार्मिक परंपराओं में पढ़ाया जाता है। इसमें शामिल है:

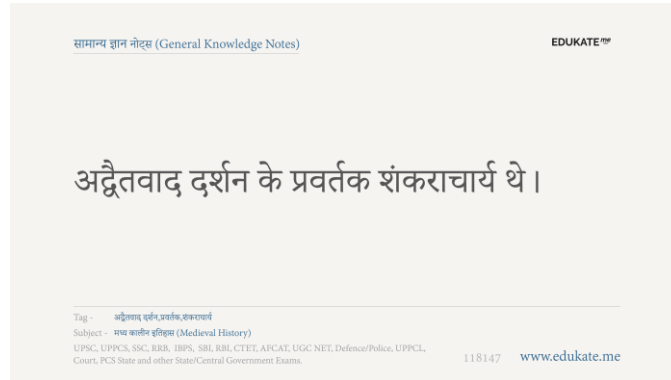
हिंदू धर्म : में उपनिषद है, जो एक सिद्धांत है कि एक nondualistic रूप में व्याख्या की गई है सिखाना, मुख्य रूप से जैसे tvam एसआई । अद्वैत वेदांत के शंकर जो सिखाता है कि एक एकल शुद्ध चेतना ही वास्तविकता है, और दुनिया असत्य है कि (माया)। कश्मीरा शैववाद और देवी केंद्रित शक्तिवाद सहित हिंदू तंत्र के गैर-दोहरे रूप । उनका दृष्टिकोण अद्वैत के समान है, लेकिन वे सिखाते हैं कि दुनिया असत्य नहीं है, बल्कि यह चेतना की वास्तविक अभिव्यक्ति है। के फार्म हिन्दू आधुनिकता जो मुख्य रूप से अद्वैत और जैसे आधुनिक भारतीय संतों सिखाना रमण महर्षि और स्वामी विवेकानंद ।

बौद्ध धर्म : "शून्यवाद (शून्यता का दृश्य) या मध्यमाका स्कूल", जो मानता है कि पारंपरिक सत्य और परम सत्य के साथ-साथ संसार के बीच एक गैर-दोहरी संबंध है (अर्थात, कोई वास्तविक अलगाव नहीं है) और निर्वाण । "विज्ञानवाद (चेतना दृष्टिकोण) या योगाकार स्कूल", जो मानता है कि किसी विषय और उसकी वस्तुओं के बीच कोई अंतिम अवधारणात्मक और वैचारिक विभाजन नहीं है, या एक संज्ञानात्मक और जो कि ज्ञात है। यह मन-शरीर द्वैतवाद के खिलाफ भी तर्क देता है, यह मानते हुए कि केवल चेतना है । तथागतगर्भ-विचार , जो मानता है कि सभी प्राणियों में बुद्ध बनने की क्षमता है। वज्रयान -buddhism, सहित तिब्बती बौद्ध की परंपराओं Dzogchen और Mahamudra । पूर्वी एशियाई बौद्ध परंपराएं जैसे ज़ेन और हुआयन , विशेष रूप से उनकी अंतर्प्रवेश की अवधारणा । ताओवाद , जो ताओ (शाब्दिक रूप से "रास्ता") नामक एक सूक्ष्म सार्वभौमिक शक्ति या ब्रह्मांडीय रचनात्मक शक्ति के विचार को सिखाता है । सुबुद .[11,12]

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 4, Issue 1, January 2015



अब्राहमिक परंपराएं :ईसाई फकीर जो "नॉनडुअल अनुभव" को बढ़ावा देते हैं, जैसे कि मिस्टर एकहार्ट और नॉर्विच के जूलियन । इस ईसाई अद्वैतवाद का ध्यान उपासक को ईश्वर के करीब लाने और ईश्वर के साथ "एकता" का एहसास कराने पर है।

सूफीवाद ,यहूदी कबलाह

पश्चिमी परंपराएं:नव-प्लेटोनिज्म जो सिखाता है कि सभी वास्तविकता का एक ही स्रोत है, एक ।पश्चिमी दार्शनिक जैसे हेगेल , स्पिनोज़ा और शोपेनहावर । उन्होंने दार्शनिक अद्वैतवाद या आदर्शवाद के विभिन्न रूपों का बचाव किया ।ट्रान्सेंडेंटलिज्म , जो जर्मन आदर्शवाद और भारतीय धर्मों से प्रभावित था ।

ब्रह्मविद्या, नया जमाना

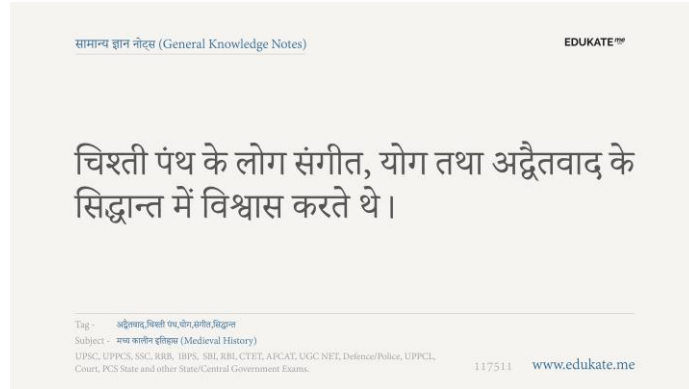
विचार – विमर्श

महाभारत युद्ध के उपरांत समाज कुछ ऐसी विचारधारा में फंस गया था कि मानवमात्र स्वयमेतर किसी पर विश्वास नहीं करना चाहता था। जैन तथा बौद्ध मत ने मानव समाज के आत्मविश्वास को पुष्ट कर उन्हें व्यावहारिक जीवन सुचारु रूप से जीने के लिए प्रेरित किया।"अद्वैत" अद्वैतवाद को संदर्भित करता है, वास्तविकताओं के बीच गैर-भेद, आत्मान (व्यक्तिगत स्वयं) और ब्राह्मण (एकल सार्वभौमिक अस्तित्व) की एकता , जैसा कि वेदांत , शक्तिवाद और शैववाद में है । हालांकि यह शब्द आदि शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत स्कूल से सबसे अच्छी तरह से जाना जाता है , "अद्वैत" का प्रयोग कई मध्यकालीन युग के भारतीय विद्वानों के साथ-साथ आधुनिक स्कूलों और शिक्षकों द्वारा ग्रंथों में किया जाता है। अद्वैत की हिंदू अवधारणा इस विचार को संदर्भित करती है कि संपूर्ण ब्रह्मांड एक आवश्यक वास्तविकता है, और ब्रह्मांड के सभी पहलू और पहलू अंततः उसी एक वास्तविकता की अभिव्यक्ति या उपस्थिति है। दासगुप्ता और मोहंता के अनुसार, उपनिषद काल से, वैदिक और बौद्ध दोनों, भारतीय विचारों के विभिन्न पहलुओं में अद्वैतवाद विकसित हुआ। भारतीय विचार में अद्वैतवाद का सबसे पुराना निशान छंदोग्य उपनिषद में पाया जा सकता है , जो सबसे पहले बौद्ध धर्म से पहले का है। पूर्व-सांप्रदायिक बौद्ध धर्म भी चंदोग्य उपनिषद की शिक्षाओं का जवाब दे रहा होगा , इसके कुछ आत्मान -ब्राह्मण संबंधित तत्वमीमांसा को खारिज कर दिया। अद्वैत इस तरह के रूप में हिंदू धर्म के विभिन्न स्कूलों में विभिन्न रूपों में प्रकट होता है अद्वैत वेदांत , विशिष्टाद्वैत वेदांत (वैष्णव), शुद्धाद्वैत वेदांत (वैष्णव), अद्वैत शैव और Shaktism । आदि शंकराचार्य के अद्वैत वेदांत में , अद्वैत का तात्पर्य है कि सभी वास्तविकता ब्रह्म के साथ एक है , कि आत्मा (आत्मा, स्वयं) और ब्रह्म (परम अपरिवर्तनीय वास्तविकता) एक हैं। कुछ हिंदू परंपराओं के अद्वैत विचार उन स्कूलों के विपरीत हैं जो द्वैतवाद या द्वैत की रक्षा करते हैं , जैसे कि माधवाचार्य ने कहा कि अनुभवी वास्तविकता और भगवान दो (द्वैत) और विशिष्ट हैं।

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 4, Issue 1, January 2015



वेदांत के कई स्कूल अद्वैतवाद का एक रूप सिखाते हैं। सबसे प्रसिद्ध अद्वैत वेदांत है, लेकिन अन्य अद्वैत वेदांत स्कूलों का भी एक महत्वपूर्ण प्रभाव और अनुसरण है, जैसे विशिष्टाद्वैत वेदांत और शुद्धाद्वैत, दोनों ही भेदभेद हैं। अद्वैत वेदांत की अद्वैतता ब्रह्म और आत्मा की पहचान की है। अद्वैत भारतीय संस्कृति और धर्मों में एक व्यापक धारा बन गया है, जिसने कश्मीर शैववाद जैसी बाद की परंपराओं को प्रभावित किया है। अद्वैत वेदांत पर सबसे पुरानी जीवित पांडुलिपि गौड़पाद (६वीं शताब्दी सीई) की है, जिन्हें पारंपरिक रूप से गोविंदा भगवत्पाद के शिक्षक और आदि शंकराचार्य के दादा के रूप में माना जाता है। अद्वैत को आदि शंकराचार्य (788-820 सीई) की अद्वैत वेदांत परंपरा से सबसे अच्छी तरह से जाना जाता है, जो कहता है कि ब्रह्म, एकमात्र एकीकृत शाश्वत सत्य, शुद्ध अस्तित्व, चेतना और आनंद (सत-चित्त-आनंद) है। [13,14]

जैन दर्शन में सत्य-अहिंसा पर विशेष बल दिया गया। यह निरीश्वरवादी दर्शन है। इसमें सृष्टि को अनादि तथा छह तत्त्वों से – जीव, पुद्गल (शरीर), धर्मद्रव्य, अधर्मद्रव्य, आकाश (अनंत) तथा काल (मृत्यु) से बना हुआ माना है। साधना के सात सोपान हैं:

1. जीव (आत्मा),
2. अजीव (शरीर),
3. प्राप्ताव,
4. बंध,
5. संवर,
6. निर्जरा तथा
7. सप्तम् सोपान कैवल्य (मोक्ष) है।

बौद्ध दर्शन के प्रतिष्ठापक महात्मा बुद्ध (सिद्धार्थ) थे। महात्मा बुद्ध ने राजसी वैभव की निस्सारता का अनुभव किया तथा बोधिसत्त्व प्राप्त करके उन्होंने निरीश्वरवाद की स्थापना की। बौद्ध दर्शन के अनुसार चार आर्यसत्य हैं:

1. सर्वदुःखम्,
2. दुःख समुदाय,
3. दुःख निरोध,
4. दुःख निरोधगामिनी प्रतिपद। न सांसारिक भोग में लिप्त रहना उचित है और न शरीर को व्यर्थ का कष्ट देना। आष्टांगिक मार्ग से इच्छाओं और तृष्णाओं पर विजय प्राप्त की जा सकती है यह दर्शन क्षणिकवादी है। इस दर्शन में आत्मा के स्थायित्व की भी अस्वीकृति है, वह निरंतर परिवर्तनशील मानी गयी है। बौद्ध दर्शन में मुख्य रूप से सत्कर्म पर बल दिया गया है, वही निर्वाण तक पहुंचा सकता है

परिणाम

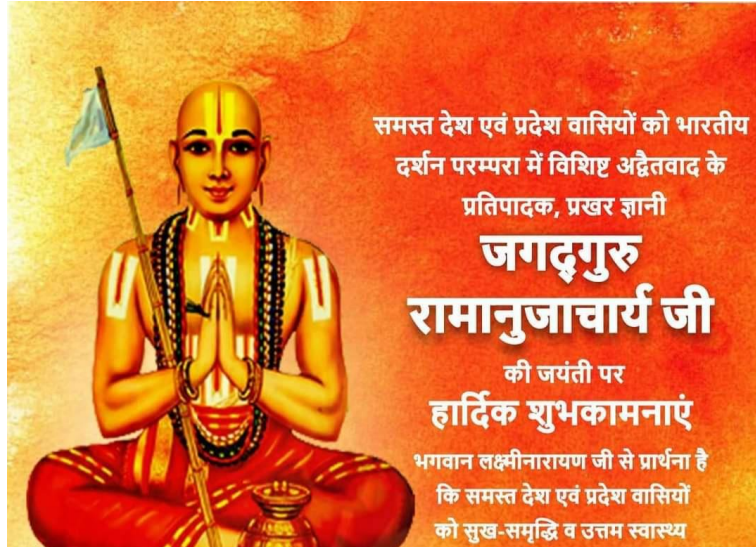
प्राचीन परंपराओं का पालन करने वाले, वेद में आस्था रखने वाले लोग चार्वाक, जैन और बौद्ध मत की नास्तिक गतिविधि से विशेष आहत हुए। उन्होंने आस्तिक दार्शनिक विचारधारा को तर्क की कसौटी पर कसकर जीवन के निकट लाने का प्रयास किया। इस

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 4, Issue 1, January 2015

प्रकार समाज का एक वर्ग नास्तिक दर्शनों में विश्वास कर रहा था तो दूसरा वर्ग आस्तिक दर्शनों में आस्था रखता था। इस वर्ग के दार्शनिक आत्मा-परमात्मा के गुह्य रहस्यों को विभिन्न आयामों से देखकर अपनी अलग-अलग दर्शन पद्धतियों का परिचय दे रहे थे।



आस्तिक दर्शनों की संख्या छह थी, अतः वे षड्दर्शन नाम से अभिहित हैं:

- न्याय दर्शन के प्रणेता गौतम मुनि थे। यह मत तर्क तथा ज्ञान पर बल देता है। इसके अनुसार ब्रह्म सर्वशक्तिसंपन्न, सर्वज्ञ तथा सत्य है। आत्मा भी सत्य, अजर तथा अमर है। तर्क चार प्रमाणों (अनुमान, उपमान, प्रत्यक्ष तथा आप्त शब्द) पर आधारित रहता है। इस दर्शन ने तर्क-प्रणाली को विकसित किया।
- वैशेषिक दर्शन के उद्भावन कणाद मुनि थे। उन्होंने दृश्य जगत् की व्याख्या, उसे विभिन्न श्रेणियों में विभक्त करके की है, अतः इस दर्शन के अनुसार विश्व का सत्य-द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष तथा समवाय है। वैशेषिक ने परमाणुवाद पर फिर से दृष्टि डाली।[15,16]

सांख्य दर्शन के प्रणेता कपिल मुनि थे। उन्होंने जड़ जंगम जगत् की प्रहेलिका सुलझाते हुए पुरुष के साथ चौबीस प्राकृतिक तत्त्वों का आख्यान किया। इसी से यह सांख्य दर्शन नाम से अभिहित हुआ। कपिल मुनि के अनुसार जब तक प्रकृति की सत्त्व रज तम में साम्यावस्था है, उत्पत्ति नहीं होती। विषमावस्था में उत्पत्ति होती है, पुनः साम्य होने पर प्रलय में सब कुछ समाहित हो जाता है। पुरुष अजन्मा, सर्वशक्तिसंपन्न, अमर और अलिप्त है। वह केवल प्रकृति की साम्यावस्था को भंग करता है। चौबीस तत्त्वों की गणना इस प्रकार की है:

प्रकृति (सत्, रज, तम से युक्त) 1+बुद्धि 1+अहंकार 1। (सत्, रज, तम के उद्वेलन से कुछ आंतरिक परिणाम उत्पन्न होते हैं तथा कुछ बाह्य): आंतरिक परिणाम = मन (1) + ज्ञानेंद्रियां (5)+ कर्मेन्द्रियां (5) बाह्य परिणाम= तन्मात्रा (5)+ पंचभूत (5) फलतः सृष्टि का उद्भव होता है। कपिल मुनि ने सांख्य दर्शन में मात्र सिद्धांतों का विवेचन किया है।

योग दर्शन के उद्भावन पतंजलि ने सांख्य दर्शन के सिद्धांतों को कर्म से जोड़कर प्रस्तुत किया। उन्होंने चित्तवृत्ति निरोध पर बल दिया। उसको दो श्रेणियों में बांटा-

1. शरीरपरक (हठयोग),
2. मनपरक (राजयोग)।

हठयोग के अंतर्गत अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, नियम, आसन, प्राणायाम प्रत्याहार का विवेचन है तथा राजयोग के अंतर्गत धारणा, ध्यान, समाधि का अंकन है। इन्द्रियों के लोभ संवरण तथा चित्तवृत्ति निरोध के फलस्वरूप तुरीयावस्था (समाधि की

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 4, Issue 1, January 2015

अवस्था) तदुपरांत जीवनमुक्ति (जब तक शरीर नहीं त्यागा) और अंततोगत्वा देहमुक्ति (शरीर त्याग कर) की उपलब्धि होती है। अद्वैत, मूर्ति कहते हैं, ब्रह्म और आत्म-चेतना (विजना) का ज्ञान बिना किसी अंतर के है। वेदांत का लक्ष्य "वास्तव में वास्तविक" को जानना है और इस प्रकार उसके साथ एक हो जाना है। अद्वैत वेदांत के अनुसार, ब्राह्मण सबसे ज्यादा है हकीकत, ब्रह्मांड, अद्वैत दर्शन के अनुसार, बस ब्राह्मण से नहीं आती है, यह है ब्रह्म। ब्रह्मांड में मौजूद सभी में विविधता के पीछे ब्रह्म एकमात्र बाध्यकारी एकता है। ब्रह्म भी वह है जो सभी परिवर्तनों का कारण है। ब्राह्मण "रचनात्मक सिद्धांत है जो पूरी दुनिया में महसूस किया जाता है"। अद्वैत के nondualism, की हिंदू अवधारणा पर निर्भर करता है आत्मन जो एक संस्कृत शब्द है कि व्यक्ति के साधन "असली स्व", "सार", और आत्मा। आत्मन है पहले सिद्धांत, सच घटना के साथ एक व्यक्ति से परे पहचान के स्वयं, एक व्यक्ति का सार। आत्मा सार्वभौमिक सिद्धांत है, एक शाश्वत अविभाज्य आत्म-प्रकाशमान चेतना, हिंदू धर्म के अद्वैत वेदांत स्कूल का दावा करता है। अद्वैत वेदांत दर्शन आत्मा को स्वयंभू जागरूकता, असीम, अद्वैत और ब्रह्म के समान मानता है। अद्वैत विचारधारा का दावा है कि प्रत्येक जीव के भीतर "आत्मा, स्वयं" है जो पूरी तरह से ब्रह्म के समान है। यह पहचान मानती है कि एक आत्मा है जो सभी जीवित प्राणियों को जोड़ती है और मौजूद है, उनके आकार या रूपों की परवाह किए बिना, कोई भेद नहीं है, कोई श्रेष्ठ नहीं है, कोई हीन नहीं है, कोई अलग भक्त आत्मा नहीं है, नहीं भगवान आत्मा (ब्राह्मण) को अलग करें। एकता सभी प्राणियों को एकजुट करती है, प्रत्येक प्राणी में परमात्मा है, और सभी अस्तित्व एक ही वास्तविकता है, अद्वैत वेदांती कहते हैं। अद्वैत वेदांत की अद्वैतवाद अवधारणा का दावा है कि प्रत्येक आत्मा अनंत ब्रह्म से अलग नहीं है।

तात्पर्य ६.२०-२३ (चालू है) : पतञ्जलि पद्धति में दिव्य आनन्द को स्वीकार किया गया है, किन्तु अद्वैतवादी इस दिव्य आनन्द को स्वीकार नहीं करते क्योंकि उन्हें भ्रम है कि इससे कहीं उनके अद्वैतवाद में बाधा न उपस्थित हो जाय। अद्वैतवादी ज्ञान तथा ज्ञाता के द्वैत को नहीं मानते, किन्तु इस श्लोक में दिव्य इन्द्रियों द्वारा अनुभूत दिव्य आनन्द को स्वीकार किया गया है। इसकी पुष्टि योगपद्धति के विख्यात व्याख्याता पतञ्जलि मुनि ने भी की है। योगसूत्र में (३.३४) महर्षि कहते हैं – पुरुषार्थशून्यानां गुणानां प्रतिप्रसवः कैवल्यं स्वरूपप्रतिष्ठा वा चितिशक्तिरिति।

अद्वैत वेदांत ने औपचारिक वास्तविकता के तीन स्तरों को निरूपित करने के मानदंड के रूप में उच्चीकरण को अपनाया:

परमार्थिका (परमार्थ, निरपेक्ष), वह वास्तविकता जो आध्यात्मिक रूप से सत्य और औपचारिक रूप से सटीक है। यह अनुभव करने की स्थिति है कि "जो बिल्कुल वास्तविक है और जिसमें दोनों अन्य वास्तविकता स्तरों को हल किया जा सकता है"। इस अनुभव को किसी अन्य अनुभव से घटाया नहीं जा सकता (बढ़ी)। व्यावहारिका (व्यवहार), या संवृति-साया, जिसमें अनुभवजन्य या व्यावहारिक वास्तविकता शामिल है। यह समय के साथ हमेशा बदलता रहता है, इस प्रकार एक निश्चित समय और संदर्भ में अनुभवजन्य रूप से सत्य है लेकिन आध्यात्मिक रूप से सत्य नहीं है। यह "हमारे अनुभव की दुनिया, अभूतपूर्व दुनिया है जिसे हम हर दिन जागते समय संभालते हैं"। यह वह स्तर है जिसमें जीव (जीवित प्राणी या व्यक्तिगत आत्माएं) और ईश्वर दोनों सत्य हैं; यहाँ, भौतिक जगत् भी सत्य है। Prāthibhāsika (pratibhasika, स्पष्ट वास्तविकता, अवास्तविकता), "वास्तविकता अकेले कल्पना पर आधारित"। यह अनुभव का वह स्तर है जिसमें मन अपनी वास्तविकता का निर्माण स्वयं करता है। एक प्रसिद्ध उदाहरण अंधेरे में रस्सी को सांप के रूप में देखना है। [17,18]

निष्कर्ष

पूर्व मीमांसा की स्थापना करते हुए जैमिनी ने निरीश्वरवाद, बहुदेववाद तथा कर्मकांड का योग प्रस्तुत किया। उन्होंने नित्यनैमित्तिक कर्मों के साथ-साथ निषिद्ध कर्मों पर भी विचार किया। उन्होंने आत्मा को अजर-अमर तथा वेदों को अपौरुषेय माना। ब्राह्म जगत का आख्यान तीन घटकों के रूप में किया-

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 4, Issue 1, January 2015

1. शरीर
2. इन्द्रियां तथा
3. विषय। उनके अनुसार अभीष्ट तत्त्व मोक्ष है। मोक्ष का अभिप्राय आत्मज्ञान से है।

वेदों का मर्म है वेदांत वेदांत का मर्म है अद्वैत वेदांत

धीरो लोकविपर्यस्त वर्तमानोऽपि लोकसत्। न समाधि न विक्षेपं न लेपं स्वस्य पश्यति॥ भावाभावविहीनो यस्तृप्तो निर्वासनो बुधः। नैव किञ्चित् कृतं तेन लोकदृष्ट्या विकुर्वता॥ प्रवृत्तौ वा निवृत्तौ वा नैव धीरस्य दुर्ग्रहः। यदा यत्कर्तुमायाति तत्कृत्वा तिष्ठतः सुखम्॥ अप्रयत्नात्प्रयत्नाद्वा मूढो नाप्नोति निर्वृतिम्। तत्त्वनिश्चयमात्रेण प्राज्ञो भवति निर्वृतः॥	ज्ञानी तो संसारियों से उल्टा ही होता है। सामान्य व्यवहार करता हुआ न ध्यान का प्रयास करता है, न व्याकुल होता है न मोहित। ज्ञानी तृप्त एवं वासनारहित होता है। बहुत कुछ करते रहने पर भी वस्तुतः वह कुछ नहीं करता। ज्ञानी का पसंद-नपसंद को लेकर हठ नहीं होता। बाहर स्थितियाँ खराब होने पर भी भीतर आनंद में रहता है। मूढ़ पुरुष न प्रयत्न से, न ही अप्रयत्न से शान्ति प्राप्त कर पाता है। ज्ञानी सहज ही ज्ञान से शान्ति प्राप्त कर लेता है।
--	--

अद्वैत वेदांत की शांति और आनंद वाली सीख!

अष्टावक्र गीता

एक अनूठे युवा ऋषि का एक राजा को शुद्धतम उपदेश

इस अद्भुत ग्रंथ के अठारहवें अध्याय पर आचार्य प्रशांत के साथ सरल कोर्स

(अधिक जानकारी के लिए पोस्ट का विवरण देखें)

कामेश्वर नाथ मिश्रा के अनुसार, में से एक अर्थ advaya इंडिक में संस्कृत बौद्ध ग्रंथों है कि यह के लिए संदर्भित करता है मध्यम मार्ग दो विपरीत चरम सीमाओं (जैसे के बीच eternalism और annihilationism), और इस प्रकार यह है "नहीं दो"। इन संस्कृत महायान सूत्रों में से एक, विमलकीर्ति निरदेश सूत्र में "अद्वैत के धर्म द्वार" (अद्वैत धर्म द्वार प्रवेसा) पर एक अध्याय है, जिसके बारे में कहा जाता है कि इसे एक बार दर्ज किया जाता है जब कोई यह समझता है कि विपरीत चरम के कई जोड़े कैसे खारिज किए जाने हैं पकड़ने के रूप। परम वास्तविकता को समझने के लिए जिन चरम सीमाओं से बचना चाहिए, वे पाठ में विभिन्न पात्रों द्वारा वर्णित हैं, और इसमें शामिल हैं: जन्म और विलुप्त होने, 'मैं' और 'मेरा', धारणा और गैर-धारणा, अशुद्धता और पवित्रता, अच्छा और नहीं- अच्छा, सृजित और अनिर्मित, सांसारिक और अलौकिक, संसार और निर्वाण, ज्ञान और अज्ञान, रूप और शून्यता आदि। अंतिम वास्तविकता का वर्णन करने का प्रयास करने वाला अंतिम चरित्र बोधिसत्व मंजुश्री है, जो कहता है:

यह सभी प्राणियों में शब्दहीन, अवाक है, कोई संकेत नहीं दिखाता है, संज्ञान संभव नहीं है, और सबसे ऊपर सवाल और जवाब है। विमलकीर्ति पूरी तरह से चुप रहने के द्वारा इस कथन का जवाब देती है, इसलिए यह व्यक्त करते हुए कि परम वास्तविकता की प्रकृति अक्षम्य (अनभिलाष्यत्व) और अकल्पनीय (अचिन्त्यता), मौखिक पदनाम (प्रपंच) या विचार निर्माण (विकल्प) से परे है। लंकावतार सूत्र, के साथ जुड़े एक पाठ योगकारा बौद्ध धर्म, भी शब्द "का उपयोग करता है advaya" बड़े पैमाने पर। [19,20]

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 4, Issue 1, January 2015

मध्यमा के महायान बौद्ध दर्शन में, दो सत्य या वास्तविकता को समझने के तरीकों को अद्वय (दो नहीं) कहा जाता है। जैसा कि भारतीय दार्शनिक नागार्जुन द्वारा समझाया गया है, एक अद्वैत संबंध है, अर्थात्, पारंपरिक और अंतिम सत्य के साथ-साथ संसार और निर्वाण के बीच कोई पूर्ण अलगाव नहीं है। अद्वैत की अवधारणा अन्य प्रमुख भारतीय महायान परंपरा, योगकारा स्कूल में भी महत्वपूर्ण है, जहां इसे बोधगम्य विषय (या "ग्रेस्पर") और वस्तु (या ") के बीच द्वैत की अनुपस्थिति के रूप में देखा जाता है। पकड़ा")। इसे शून्यता की व्याख्या के रूप में और जाग्रत मन की सामग्री की व्याख्या के रूप में भी देखा जाता है जो विषय-वस्तु द्वैत के भ्रम के माध्यम से देखता है। हालांकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि गैर-द्वैतवाद की इस अवधारणा में, अभी भी व्यक्तिगत मन धाराओं (चित्त संतान) की बहुलता है और इस प्रकार योगकार एक आदर्शवादी अद्वैतवाद नहीं सिखाता है। इन बुनियादी विचारों बौद्ध जैसे परंपराओं की महायान बौद्ध सैद्धांतिक व्याख्याओं को प्रभावित करना जारी रखा है Dzogchen , Mahamudra , जैन , Huayan और Tiantai जैसे के साथ ही अवधारणाओं बुद्ध की प्रकृति , चमकदार मन , इंद्र का शुद्ध , रिग्पा और Shentong ।[21,22]

भारतीय दार्शनिक परंपरा ने चिंतनशील मानव समाज को आत्मचिंतन के प्रति जागरूक रहकर आत्मिक विकास के लिए प्रेरित किया। समय-समय पर चिंताधारा के कोण भले ही बदलते हुए दिखायी पड़ते हैं किंतु यह दार्शनिक विचारधारा आस्तिकता, नैतिकता तथा अध्यात्म की आधारशिला के रूप में द्रष्टव्य है। भारतीय मिथक साहित्य में दर्शन के विविध रूपों को आख्यानो के माध्यम से आरक्षित रखा गया। कहीं-कहीं तो मिथक के माध्यम से ही दार्शनिक विचारों का क्लिष्ट रूप सर्वसुलभ हो पाया है। नचिकेता के माध्यम से संसार की निस्सारता- मुंडकोपनिषद में पक्षी युगल के माध्यम से जीव और आत्मा, देवासुर संग्राम के माध्यम से हृदयजन्य सुवृत्तियों एवं कुवृत्तियों का संघर्ष सहज रूप में अंकित है। राजा अलर्क की कथा जीवन के प्रति अनासक्ति पर प्रकाश डालती है। समुद्रपर्यंत पृथ्वी के स्वामित्व की निस्सारता को पहचानकर उन्होंने ध्यान योग से मोक्ष प्राप्त किया था। दार्शनिक परंपरा ने भारतीय समाज की चिंताधारा पर आध्यात्मिक अंकुश लगाये रखने का कार्य किया है।[23,24]

संदर्भ

1. ^ रिचर्ड ब्यूके द्वारा कॉस्मिक कॉन्शियसनेस देखें
2. ^ Nonduality.com, FAQ और Nonduality.com देखें , अद्वैतवाद क्या है, अद्वैतवाद, या अद्वैत? 100 से अधिक परिभाषाएँ, विवरण और चर्चाएँ ।
3. ^ लॉय के अनुसार, अद्वैतवाद मुख्य रूप से समझने का एक पूर्वी तरीका है: "... [अद्वैत का बीज] हालांकि अक्सर बोया जाता है, कभी भी उपजाऊ मिट्टी नहीं मिली [पश्चिम में], क्योंकि यह उन अन्य जोरदार अंकुरों के लिए बहुत विरोधी रही है। जो आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी में विकसित हो गए हैं। पूर्वी परंपरा में [...] हम एक अलग स्थिति का सामना करते हैं। वहां द्रष्टा-देखे गए अद्वैत के बीज न केवल अंकुरित हुए बल्कि प्रभावशाली दार्शनिक की विविधता (कुछ लोग जंगल कह सकते हैं) में परिपक्व हो गए। प्रजातियां। किसी भी तरह से ये सभी [पूर्वी] प्रणालियां विषय और वस्तु की अद्वैतता पर जोर नहीं देती हैं, लेकिन यह महत्वपूर्ण है कि तीन जो करते हैं - बौद्ध धर्म, वेदांत और ताओवाद - शायद सबसे प्रभावशाली रहे हैं। [21] लॉय के अनुसार, संदर्भित प्रिचर द्वारा:... जब आपको पता चलता है कि आपके मन की प्रकृति और [यू] ब्रह्मांड अद्वैत हैं, तो आप प्रबुद्ध हैं ।
4. ^ यह advaita.org.uk की वेबसाइट "अद्वैत विज्ञान" नाम से परिलक्षित होता है, जो अद्वैत की व्यापक और समावेशी समझ का प्रचार करता है।
5. ^ एडवर्ड रोअर प्रारंभिक मध्ययुगीन युग बृहदारण्यकोपनिषद-भाष्य का अनुवाद करते हैं, "(...) लोकायतिक और बौद्ध जो यह दावा करते हैं कि आत्मा मौजूद नहीं है। बुद्ध के अनुयायियों में चार संप्रदाय हैं: 1. मध्यमा जो सभी को बनाए रखते हैं वे शून्य हैं; 2. योगाचार, जो संवेदना और बुद्धि को छोड़कर बाकी सब पर दावा करते हैं, शून्य है; 3. सौत्रांतिक, जो आंतरिक संवेदनाओं से कम बाहरी वस्तुओं के वास्तविक अस्तित्व की पुष्टि करते हैं; 4. वैभाषिक, जो बाद में (सौत्रांतिक) से सहमत हैं, सिवाय इसके कि वे तत्काल के लिए संघर्ष करते हैं बुद्धि को दर्शाए गए चित्रों या रूपों के माध्यम से बाहरी वस्तुओं की आशंका।" [43] [44]
6. ^ "ए" का अर्थ है "नहीं", या "गैर"; "जाति" का अर्थ है "सृजन" या "उत्पत्ति"; "वड़ा" का अर्थ है "सिद्धांत"
7. ^ अन्य धर्मों और दर्शन पर महायान बौद्ध धर्म का प्रभाव अद्वैत वेदांत तक सीमित नहीं था। कालूपहाना ने नोट किया कि विशुद्धिमग्गा में "कुछ आध्यात्मिक अनुमान शामिल हैं, जैसे कि सर्वस्तिवादिन, सौत्रांतिक और यहां तक कि योगकारिन" ।
8. ^ नव-वेदांतदुनिया की वास्तविकता की स्वीकृति के साथ, शंकर के अद्वैत वेदांत की तुलना में भेदाभेद -वेदांत के करीब प्रतीत होता है। निकोलस एफ गियर: "रामकृष्ण, स्वामी विवेकानंद, और अरबिंदो (में एमके गांधी भी शामिल हूं) को "नव-वेदांतवादी" कहा गया है, एक ऐसा दर्शन जो अद्वैतवादियों के दावे को खारिज करता है कि दुनिया भ्रामक है। अरबिंदो, अपने द लाइफ डिवाइन में, घोषणा करता है कि वह शंकर के "सार्वभौमिक भ्रम" से अपने स्वयं के "सार्वभौमिक यथार्थवाद" (2005: 432) में स्थानांतरित हो गया है, जिसे शब्द के यूरोपीय दार्शनिक अर्थ में आध्यात्मिक यथार्थवाद के रूप में परिभाषित किया गया है।

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(An ISO 3297: 2007 Certified Organization)

Vol. 4, Issue 1, January 2015

9. ^ अभिनवगुप्त (10 वीं - 11 वीं शताब्दी ईस्वी के बीच) जिन्होंने पिछले सभी विचारकों के दृष्टिकोणों को संक्षेप में प्रस्तुत किया और अपने ग्रंथ तंत्रलोक में अपने स्वयं के विचारों के साथ दर्शन को तार्किक रूप से प्रस्तुत किया।
10. ^ एक ईसाई संदर्भ। रमण ईसाई स्कूलों में पढ़ाया जाता था।
11. ^ मारेक: "वोबेई डेर बेग्रिफ नियो-अद्वैता दारौफ हिनवेइस्ट, दास सिच डाई ट्रेडलेले अद्वैता वॉन डायसर स्ट्रोमिंग जुनेहमेंड डिस्टेंज़िएर्ट, दा सी डाई बेडेउतुंग डेर उबेन्डेन वोबेरेइटुंग नच वि वो वोर अल अनमगंग। इस आंदोलन से खुद को दूर करता है, क्योंकि वे तैयारी अभ्यास को अभी भी अपरिहार्य मानते हैं" [119]
12. ^ एलन जैकब्स: "श्री रमण महर्षि के कई दृढ़ भक्त अब इस पश्चिमी घटना को 'नव-अद्वैत' कहते हैं। इस शब्द का चयन सावधानी से किया गया है क्योंकि 'नव' का अर्थ 'नया या पुनर्जीवित रूप' है। और यह नया रूप नहीं है शास्त्रीय अद्वैत जिसे हम महान आत्म-प्राप्त संतों, आदि शंकराचार्य और रमण महर्षि दोनों द्वारा पढ़ाया गया समझते हैं। इसे 'छद्म' भी कहा जा सकता है, क्योंकि शिक्षण को अत्यधिक क्षीण रूप में प्रस्तुत करके, इसे कथित के रूप में वर्णित किया जा सकता है अद्वैत होने के लिए, लेकिन वास्तव में ऐसा नहीं है, शब्द के पूर्ण अर्थों में। समकालीन पश्चिमी दिमाग के लिए स्वीकार्य और आकर्षक शैली में आवश्यक सत्य को पानी में डालने में, उनकी शिक्षा भ्रामक है।"
13. ^ वर्तमान में कोहेन ने खुद को पूजा से दूर कर लिया है, और अपनी शिक्षाओं को "विकासवादी ज्ञानोदय" कहते हैं। चोएन के संगठन द्वारा प्रकाशित पत्रिका, व्हाट्स इज़ एनलाइटनमेंट, २००१ की शुरुआत में कई बार नव-अद्वैत की आलोचना कर चुकी है। देखें।
14. ^ चीनी चानो पर सार और कार्य और निरपेक्ष-रिश्तेदार भी देखें
15. ^ नागार्जुन, मूलाध्यायमकरिका 24:8-10. जे एल. गारफील्ड, मिडिल वे की फंडामेंटल विजडम [143]
16. ^ देखें, एक प्रभावशाली उदाहरण के लिए, चौखापा, राज्यों, जो कि "बातें" हैं पारंपरिक मौजूद हैं, लेकिन अंत में सब कुछ dependently उत्पन्न हो गई है, और इसलिए निहित अस्तित्व के शून्य।
17. ^ "केवल प्रतिनिधित्व" या "मात्र प्रतिनिधित्व।" ऑक्सफोर्ड संदर्भ: "योगाकार के कुछ बाद के रूपों ने खुद को इस सिद्धांत की एक आदर्शवादी व्याख्या के लिए उधार दिया है, लेकिन ऐसा दृष्टिकोण असंग और वसुबंधु जैसे प्रारंभिक योगाचारियों के कार्यों से अनुपस्थित है।"
18. ^ पूर्ण: रिग्पा एनजीओ-स्रोड जीसर-मथोंग रंग-ग्रोल
19. ^ यह पाठ "शांतिपूर्ण और क्रोधी लोगों की मंशा के माध्यम से आत्म-मुक्ति का गहरा धर्म" शीर्षक वाली शिक्षाओं के संग्रह का हिस्सा है। जिसमें बार- दो थोस-ग्रोल के दो ग्रंथ शामिल हैं, तथाकथित "तिब्बती किताब ऑफ़ द डेड"। बार-करते थोस-ग्रोल काज़ी डावा संडप (1868-1922) द्वारा अनुवाद किया गया था, और संपादित और WY एवंस WENZ द्वारा प्रकाशित किया। यह अनुवाद "मृतकों की तिब्बती पुस्तक" के रूप में व्यापक रूप से जाना और लोकप्रिय हुआ, लेकिन अनुवाद और व्याख्या में कई गलतियाँ हैं। [२३३] [२३४]
20. ^ नग्न जागरूकता के साथ देखने के माध्यम से सेल्फ लिबरेशन भी देखें
21. ^ निष्क्रियता, गैर-क्रिया, कुछ भी नहीं, बिना किसी हलचल के
22. ^ इस पारस्परिक आदान-प्रदान के विवरण के लिए मैकमोहन, "द मेकिंग ऑफ बुद्धिस्ट मॉडर्निटी" [२३५] और रिचर्ड ई. किंग, "ओरिएंटलिज्म एंड रिलिजन"।
23. ^ अद्वैत-अनुयायियों में ऐतिहासिक उदाहरणों के बारे में जागरूकता का अभाव प्रतीत होता है, जैसे कि विभिन्न प्रकार की धार्मिक परंपराओं के बीच समानता की व्यक्तिपरक धारणा में कठोर दार्शनिक या सैद्धांतिक आधार का अभाव है।
24. ^ जैसा कि रब्बी मोशे कॉर्डोवरो बताते हैं: "कुछ भी निकलने से पहले, केवल अनंत एक (ईन सोफ) था, जो कि सब कुछ अस्तित्व में था। और उसके बाद भी जो कुछ भी अस्तित्व में है, उसके अलावा कुछ भी नहीं है, और आप नहीं कर सकते कुछ भी खोजें जो उसके अलावा मौजूद है, जीडी न करे। जीडी की शक्ति से रहित कुछ भी अस्तित्व में नहीं है, क्योंकि अगर वहाँ थे, तो वह सीमित होगा और द्वैत के अधीन होगा, जीडी न करे। बल्कि, जीडी वह सब कुछ है जो मौजूद है, लेकिन जो कुछ भी मौजूद है वह नहीं है Gd... कुछ भी उसके G-dliness से रहित नहीं है: सब कुछ इसके भीतर है... इसके अलावा कुछ भी नहीं है" (Rabbi Moshe Cordovero, Elimah Rabasi, p. 24d-25a; प्रारंभिक Chasidism के स्रोतों के लिए देखें: रब्बी हां' पोलोन के एकोव योसेफ, बेन पोरस योसेफ (पियोट्को 1884), पीपी। 140, 168; केसर शेम तोव (ब्रुकलिन: केहोस 2004) पीपी। 237-8; विटेबस्क के रब्बी मेनाकेम मेंडल, प्री हा- अरेट्ज़, (कोपस्ट 1884), पृष्ठ 21.)। देखें द प्रैक्टिकल तान्या, पार्ट वन, द बुक ऑफ़ इनबेटवीनर, लिआडी के श्रेउर ज़लमैन, चैम मिलर द्वारा अनुकूलित, यहूदी क्लासिक्स की गुटनिक लाइब्रेरी, पी। 232-233